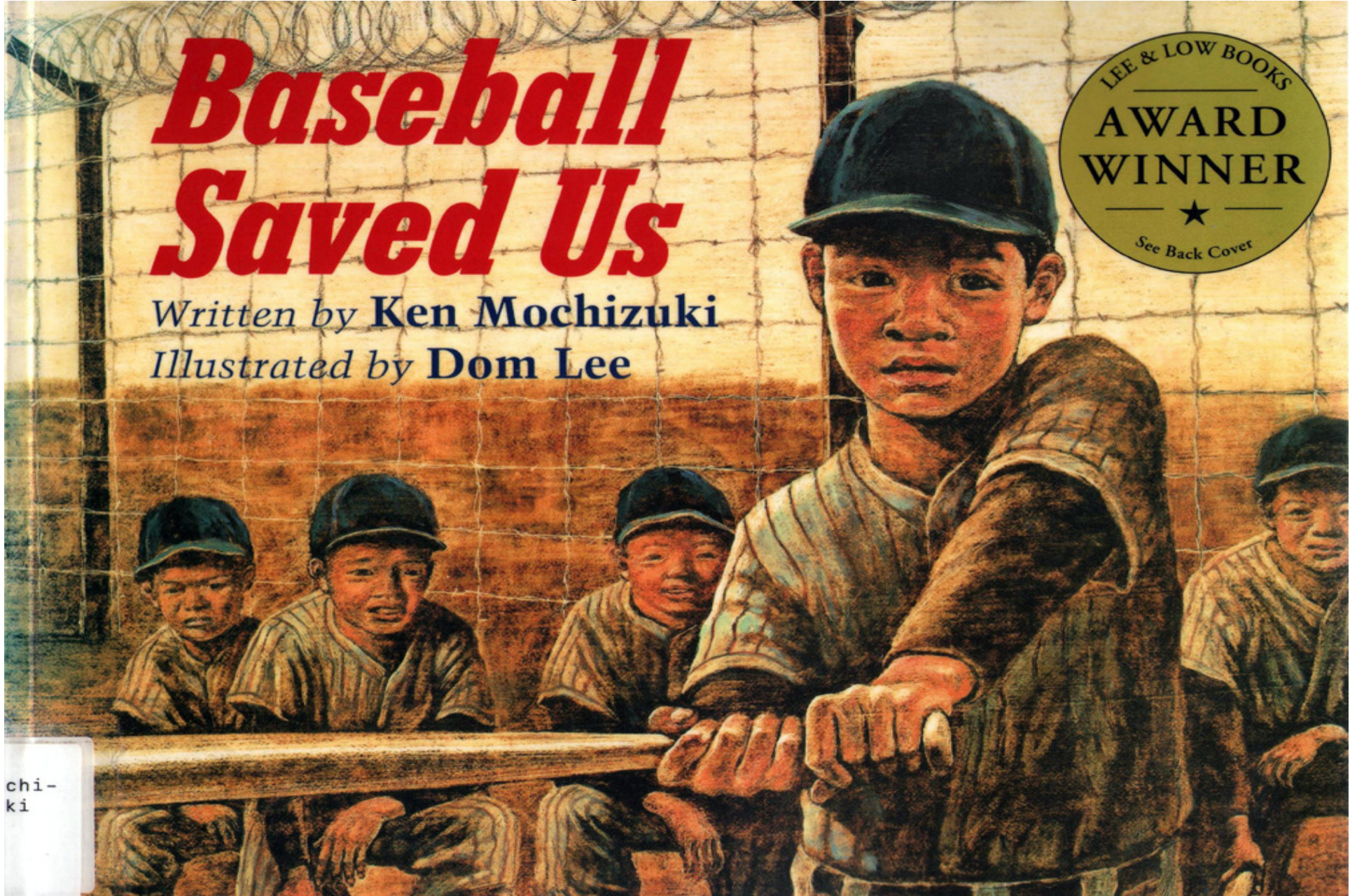


बेसबॉल के खेल ने हमें बचाया

केन मोचिज़ुकी, चित्र: डोम ली, हिंदी: विदूषक



लेखक का नोट

1942 में जब अमरीका, जापान से युद्ध लड़ रहा था तब अमरीकी फौज़ के आदेश पर, अमरीका में रह रहे सभी जापानी मूल के नागरिकों को, पश्चिमी तट से हटाया गया. 1945 तक उन्हें अमरीका के मध्य रेगिस्तान में नज़रबंद और कैद रखा गया. उसका कारण? अमरीकी सरकार को पता नहीं था कि कौन जापानी अमरीका के प्रति वफादार, और कौन देशद्रोही था. इन जापानियों ने, जो सभी अमरीकी नागरिक थे, ने दूसरे महायुद्ध के दौरान अमरीका के लिए कोई खतरा पैदा नहीं किया. 1988, में अमरीकी सरकार ने अपनी इस गलती को स्वीकार किया.





एक दिन मेरे पिता ने कैप के बाहर के विशाल रेगिस्तान को देखा. तब उन्होंने तुरंत, वहीं पर एक बेसबॉल फील्ड बनाने का निर्णय लिया.

उनके अनुसार कैप में लोगों के पास कुछ करने को ज़रूर होना चाहिए. हम लोग तफरी के लिए किसी रिसोर्ट या समर-कैप में तो थे नहीं. हम लोग रेगिस्तान के बीच में थे और लोहे के कंटीले तारों की बाड़ से घिरे थे. वहां पर बन्दूकधारी सैनिक तैनात थे, यह सुनिश्चित करने के लिए कि हम वहां से भागे नहीं. ऊंची मीनार पर खड़ा एक सैनिक – हम चाहें कहीं हों, हम पर पूरी नज़र रखता था.

जब पिताजी उस सूखी, फटी ज़मीन पर चल रहे थे तो मैंने उनसे हमें उस वीरान इलाके में लाने का कारण दुबारा पूछा.

“क्योंकि अमरीका, जापान के साथ युद्ध लड़ रहा है, इसलिए अमरीकी सरकार जापानियों पर विश्वास नहीं कर सकती. हमें यहाँ नज़रबंद करना, हमारे साथ घोर बेइंसाफी है. क्योंकि हम जापानी मूल के होने के बावजूद अमरीकी नागरिक हैं!” फिर उन्होंने एक डंडी से ज़मीन पर निशान बनाया – बेसबॉल के मैदान के लिए.



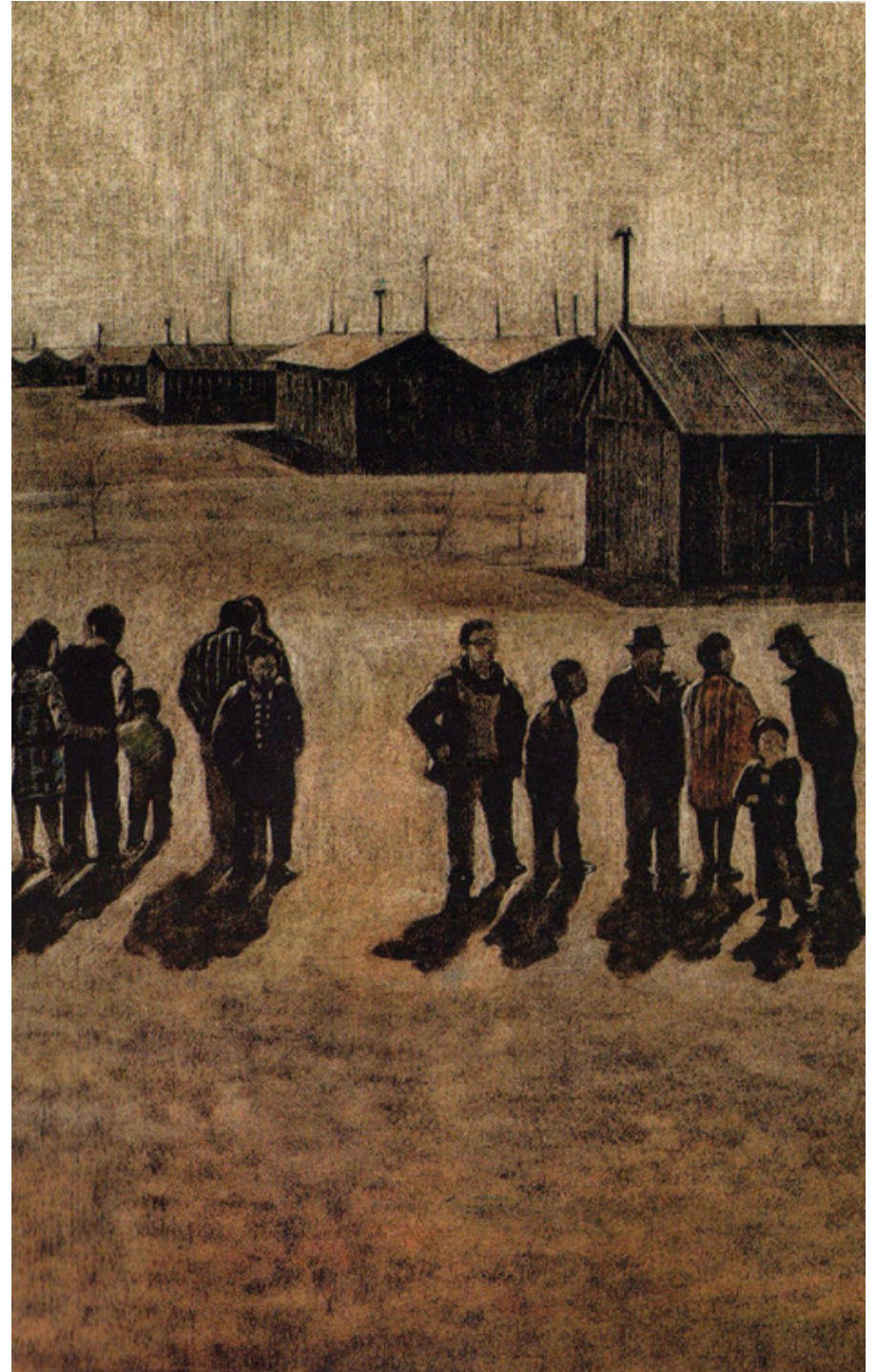
इस कैंप में आने से पहले मैं अन्य बच्चों की अपेक्षा छोटा और कमज़ोर था. खेलों की टीम का चयन करते समय मेरे ऊपर लोगों का ध्यान सबसे अंत में ही जाता था. फिर, कुछ महीने पहले यह समस्या और गंभीर हो गई. मेरे साथी मुझे चिढ़ाने लगे. मैंने किसी के साथ कोई गलत सलूक नहीं किया फिर सबने, मुझसे बात करना बंद कर दिया. उस समय रेडियो पर बार-बार “पर्ल हारबर” नाम के दूर-दराज़ स्थित टापू का नाम सुनाई देता था.

एक दिन मेरे माता-पिता मुझे स्कूल से निकालने के लिए आए. माँ सुबक-सुबक के रो रही थीं, क्योंकि उन्हें जल्दी ही अपना घर छोड़ना था. उसके लिए उन्हें घर की तमाम ज़रूरी चीज़ों को भी पैकना था. फिर एक दिन बस आई और हमें कहीं दूर ले गई. कुछ समय हमें घोड़ों के अस्तबल में रहना पड़ा. यहाँ पर आने से पहले कुछ दिन हम वहाँ रहे.



कैंप में घर जैसा वातावरण नहीं था. यहाँ दिन में बेहद गर्मी और रात को उतनी ही ठण्ड पड़ती थी. दिन भर धूल के ऐसे बवंडर उठते थे कि कुछ दिखाई ही नहीं देता था. और हर चीज़ में रेत भर जाती थी. कभी-कभी बाहर नहाने जाते, या खाने की लाइन में खड़े होते वक़्त, धूल के बवंडर हमपर आक्रमण करते थे. पुराने घर में हमारा अलग स्नानघर था. पर यहाँ हमें सबके साथ, एक ही बाथरूम में नहाना पड़ता था.

हमें सबके साथ ही मिलकर खाना भी पड़ता था. यहाँ पर मेरा बड़ा भाई टेडी, अपने दोस्तों के साथ खाना खाता था. हम लोग बहुत से अन्य लोगों के साथ मिलकर एक बैरक में रहते थे. बैरक बहुत छोटा था और उसमें दीवारें नहीं थीं. रात को छोटे बच्चों के रोने-चिल्लाने से हमारे नींद खुल जाती थी.









पुराने घर में लोग हमेशा कुछ-न-कुछ काम करने में व्यस्त रहते थे. पर यहाँ उन्हें करने के लिए कुछ नहीं था. वो दिन भर या खड़े रहते, या फिर बैठे रहते. एक दिन पिताजी ने टेडी से एक गिलास पानी लाने को कहा.

“आप खुद ले आइए,” टेडी ने जवाब दिया.

“तुमने क्या कहा?” पिताजी ने गुस्से में कहा.

कुछ बड़े लोगों ने टेडी को फटकारते हुए कहा, “अपने पिताजी से इस तरह बात करने की तुम्हारी जुरत कैसे हुई!”

टेडी उठ कर खड़ा हुआ. जिस क्रेट पर वो बैठा था उसने उसे लात मारी और वहां से चलता बना. मैंने टेडी को पिताजी से पहले इस तरह बात करते कभी नहीं देखा था.

इस वाकिए के बाद पिताजी को, बेसबॉल के मैदान की सख्त ज़रूरत महसूस हुई. उसके बाद हम लोग फावड़े लाए और हमने अपने बैरक के आसपास के बड़े मैदान की झाड़ियाँ साफ़ करना शुरू कीं. मीनार पर खड़ा सिपाही हमें लगातार देखता रहता. कुछ समय बाद बच्चों और बड़ों के अन्य समूह आए और उन्होंने भी अपना हाथ बंटाय़ा.

बेसबॉल खेलने के लिए हमारे पास कुछ सामान नहीं था. पर लोगों ने उसकी भी अच्छी जुगाड़ की. वो सिंचाई के पानी को, एक पतली नहर के ज़रिए मैदान में लाए. पानी से वहां की धूल जम गई और ज़मीन पुख्ता हो गई. उसी से बेसबॉल की फ़िल्ड बनी. क्यूंकि वहां निशानों के लिए कोई पेड़ नहीं थे, इसलिए लोगों ने पेड़ों की बजाए लकड़ी के खम्बे गाढ़े. खेलने के लिए बैट-बाल, दस्ताने हमारे पुराने दोस्तों ने बोरो में भर कर भेजे. माँ और अन्य महिलायों ने गद्दों के कवर उधेड़ कर उनसे हमारी यूनिफ़ॉर्म बनायीं. अंत में हमारी यूनिफ़ॉर्म बिल्कुल असली जैसी लगने लगी.





मैंने बेसबॉल खेलने की कोशिश की, पर मैं उसे अच्छी तरह खेल नहीं पाया. पिताजी ने कहा कि अच्छा खेलने के लिए मुझे कठिन अभ्यास करना होगा. पर एक बात मुझे साफ़ समझ में आई. पुराना घर की बजाए यहाँ पर मेरे लिए बेसबॉल खेलना कहीं ज्यादा आसन था. कारण? यहाँ पर ज्यादातर बच्चे मेरी ही कद-काठी के थे.

मैं जब कभी प्रैक्टिस करना, मीनार पर खड़ा सिपाही मुझे देखता रहता. उसे लगता कि बाकी बच्चे खेल में, मुझ से कहीं अच्छे थे और मेरा खेल कोई खास नहीं था. क्योंकि वो सिपाही मुझे लगातार घूरता था, इसलिए मैं अच्छी तरह खेलने की अपनी पूरी कोशिश करता था.

फिर तो बेसबॉल का सिक्का चल निकला. हर समय लोग बेसबॉल खेलते नज़र आते – कभी बड़े, तो कभी बच्चे. बेसबॉल में मुझे “सेकंड-बेस” स्थान दिया गया था, क्योंकि मित्रों के अनुसार वो काम सबसे आसान था, और मैं उसे कर सकता था. हाँ, जब मेरे हाथ में बैट होता तो दूसरी टीम के खिलाड़ी मुझ पर हँसते थे, और खिल्ली उड़ाने के लिए सब करीब आ जाते थे. मेरे पीछे “कैच” पकड़ने वाला, और विपक्षी टीम के समर्थक कहते, “आसन है!” मैं अक्सर जल्दी “आउट” हो जाता. पर कभी-कभी मैं एक रन बना भी लेता.





फिर साल खत्म होने आया. अब हमें अंतिम खेल में “चैंपियन” यानि विजेता टीम को चुनना था. हमारी टीम की हालत काफी खस्ता थी. विपक्षी टीम 3 : 2 से पहले ही जीत रही थी. हमारे दो खिलाड़ी भी आउट हो चुके थे. हमारा एक खिलाड़ी “सेकंड-बेस” पर था.

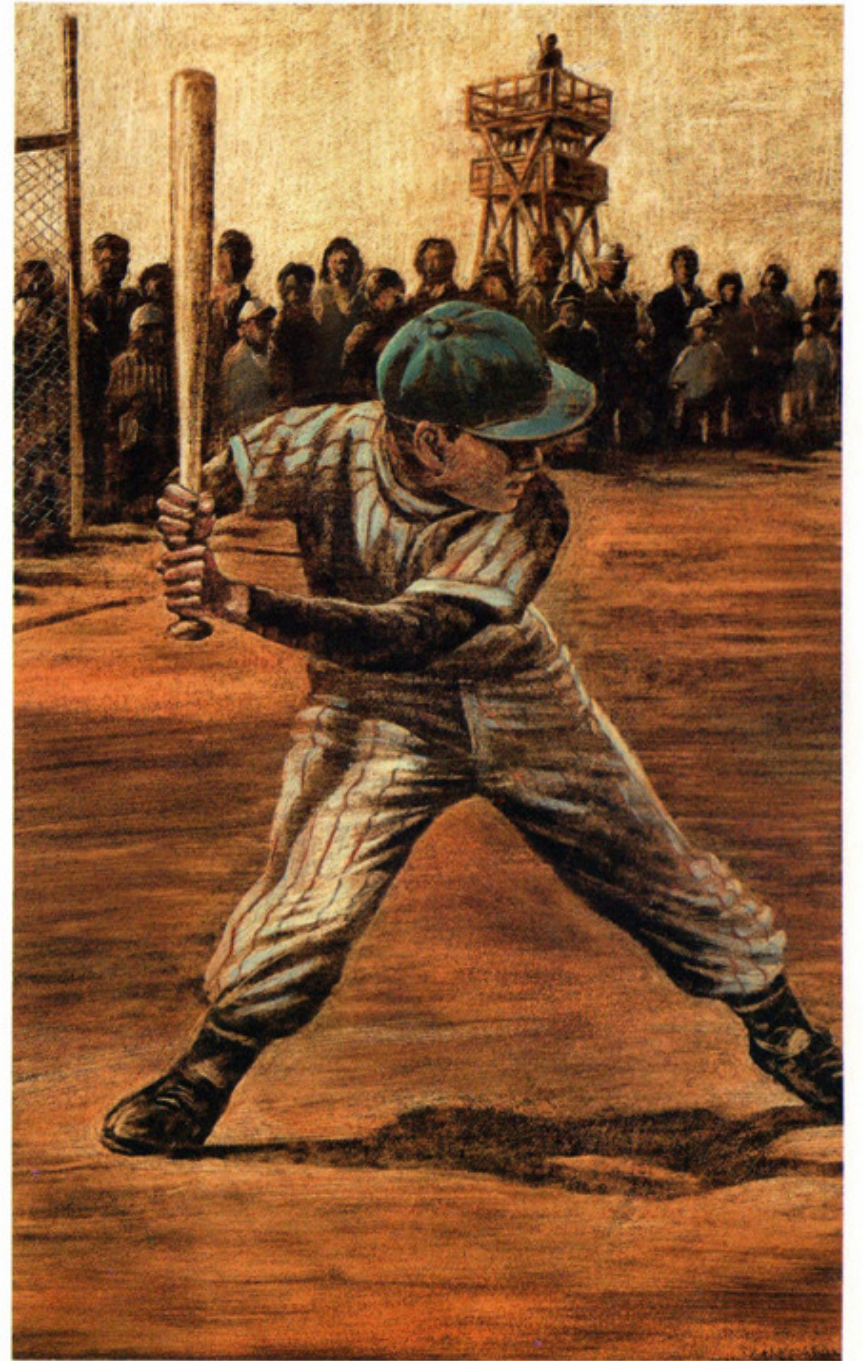
अब बैट मेरे हाथ में था. दो बार गेंद फेंकी गई, और दोनों बार वो मेरे बल्ले से नहीं छुई. “सेकंड-बेस” वाला साथी प्रार्थना कर रहा था, कि किसी तरह मैं बल्ला चला दूं जिससे मेरे स्थान पर कोई और बैट करने आ जाए. दर्शक जोर-जोर से शोर मचा रहे थे. “तुम टीम को जिता सकते हो! जोर से मारो!!”



जब मैंने ऊपर की ओर देखा तो मुझे मीनार पर वही सिपाही दिखाई दिया. वो रेलिंग पर झुका था और उसका काला चश्मा सूरज के तेज़ प्रहार से उसकी हिफाज़त कर रहा था. वो लगातार मुझे देख रहा था – एकदम टकटकी लगाए. उसे देख, मुझमें एक अजीब सा पागलपन सवार हो गया.

मैंने कसकर बैट को पकड़ा और अभ्यास के लिए उसे दो-तीन बार हवा में घुमाया. मैंने निश्चय किया कि मैं गेंद को उस सिपाही से भी दूर मारूंगा – चाहें मेरी जान ही क्यों न चली जाए. फिर सब कुछ शांत हो गया और बॉलर ने गेंद फेंकी.







मैंने निशाना ताका और बाल को बैट से बहुत जोर से मारा. इससे पहले मैंने ऐसी आवाज़ पहले कभी नहीं सुनी थी. बाल, मेरी अपेक्षा से भी कहीं ज्यादा दूर गई.

रेगिस्तान की धूप में मुझे गेंद, ऊपर हवा में दिखाई दे रही थी. मैं दौड़ कर “फर्स्ट-बेस” तक गया. गेंद, बाएं हाथ वाले फील्डर के सिर पर से होकर गुज़री.

फिर मैं एक-बेस से, दूसरी-बेस की ओर दौड़ा. मुझे लगा जैसे मैं आउट हो जाऊंगा. पर मैं बिना परवाह किए जितना मुझ से बन पाया, उतनी तेज़ी से दौड़ता रहा. मैं “होम-बेस” पर कब पहुंचा मुझे इसका कोई अंदाज़ नहीं रहा.

इससे पहले मैं स्थिति का जायजा लेता, मेरी टीम के साथियों ने मुझे अपने कंधे पर उठा लिया था. फिर मैंने उस मीनार और उसपर खड़े सिपाही को देखा. मुझे देखकर वो मुस्कुराया और उसने हाथ हिलाकर मेरा अभिवादन किया.





पर यह स्थिति हमेशा के लिए बरकरार नहीं रही. युद्ध खत्म होने के बाद हम कैंप से दुबारा अपने घर वापिस लौटे. वहां सड़क पर और स्कूल में मुझसे कोई बात नहीं करता था. कैंप के मेरे दोस्त कहीं इधर-उधर चले गए थे. कोई भी हमारे घर के पास नहीं रहता था. यहाँ भी मुझे, दोपहर का खाना अकेले ही खाना पड़ता था.



फिर बेसबाल का सीजन शुरू हुआ. मैं फिर से अपने क्लास में सबसे छोटा लड़का था. पर कैंप में बेसबाल के अभ्यास से, मेरे सेहत पहले से अच्छी हुई थी. कई लोगों को पता था कि मैं बेसबाल का अच्छा खिलाड़ी हूँ. वो अभी भी मुझे “छुट्कू” ही कहकर बुलाते थे. पर अब वो “छुट्कू” कहते हुए कुछ मुस्कुराते थे.

पहले ही गेम के बाद से मुझे लगने लगा जैसे मैं टीम का एक सदस्य बन गया हूँ. सब बच्चे बस में हंसी-मज़ाक और मस्ती कर रहे थे. पर जैसे हम बस से उतरे मुझे यह इस बात का एहसास हुआ कि मेरी टीम और दूसरी टीम, और पूरी भीड़ में किसी की भी शक्ल-सूरत मुझ जैसी नहीं थी.

मैदान में उतरे समय मेरे हाथ कांप रहे थे. मुझे ऐसा लग रहा था जैसे तमाम “नीच” आँखें मुझे घूर रही हों और चाहतीं हों कि मैं कोई गलती करूँ. भीड़ में मुझे किसी के चिढ़ाने की आवाज़ भी सुनाई दी, “जापानी”. कैंप में जाने से पहले मैंने यह शब्द पहले कभी नहीं सुना था. उसका मतलब साफ़ था – वे लोग मुझसे नफरत करते थे.



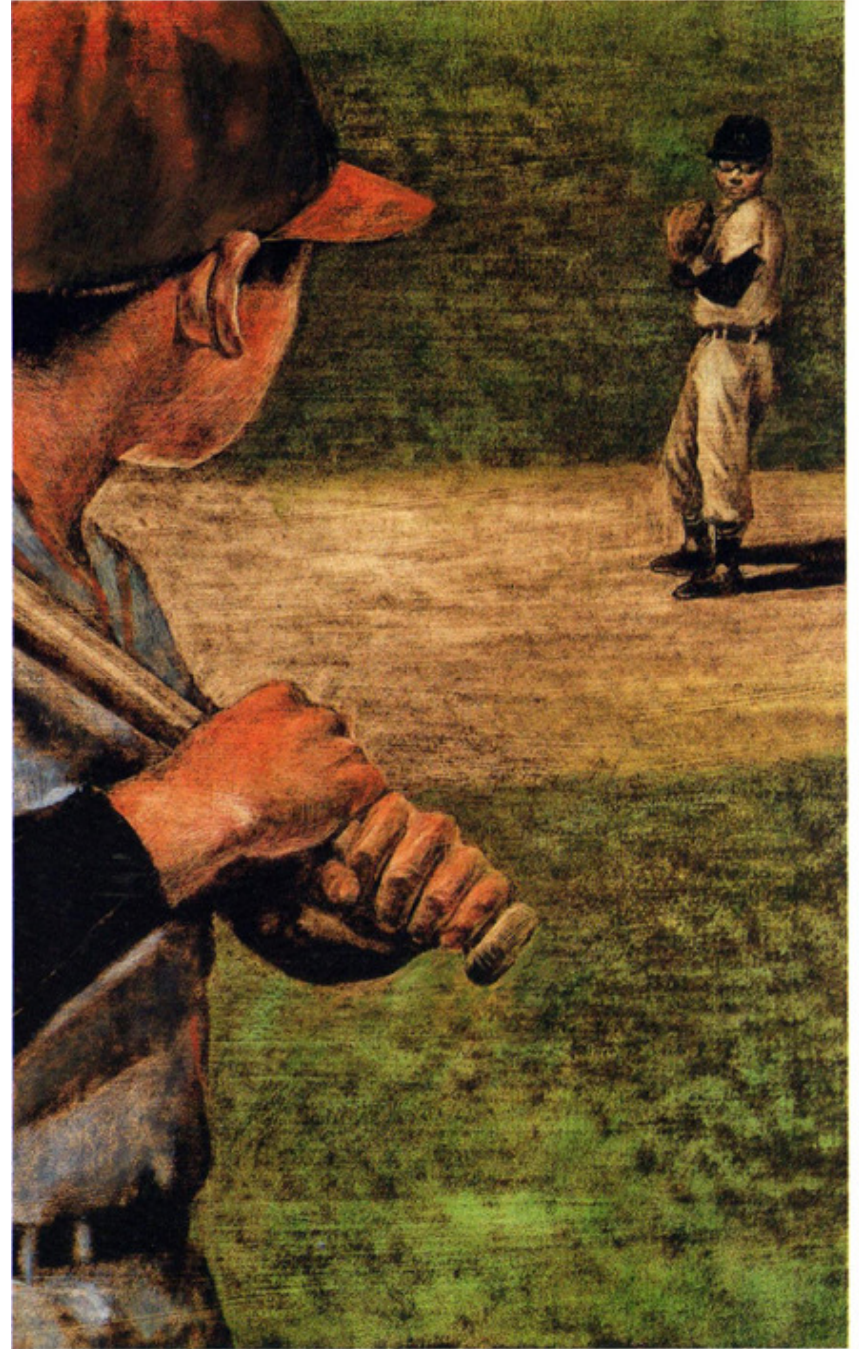
मेरी टीम बैटिंग कर रही थे, और मुझे अगले बैट्समैन जैसे जाना था. मैं नीचे नज़र झुका कर देखने लगा. काश, मैं बीमारी का बहाना बनाकर इस जोखिम से बच पाता! पर मुझे लगा उससे स्थिति और बिगड़ेगी. फिर स्कूल में बच्चे मुझे “बुजदिल” कहकर मेरा मज़ाक उड़ायेंगे. वो “जापानी” बुलाकर मेरी खिल्ली तो उड़ायेंगे ही.

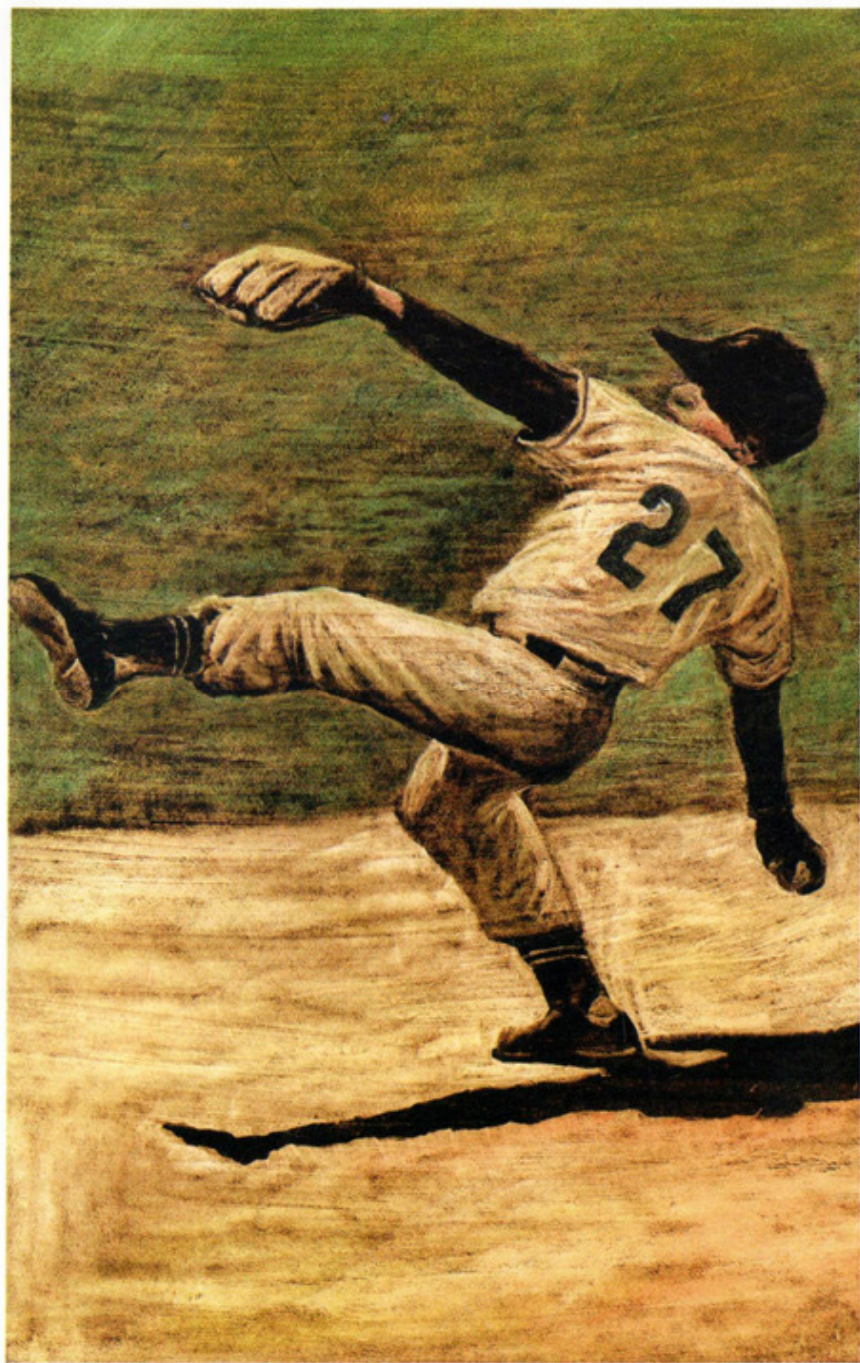
अब मेरी बारी थी बैट करने की. भीड़ चिल्ला रही थी, “यह जापानी किसी काम का नहीं है!” “मैदान छोड़ दे!” मैंने भीड़ को कहते हुए सुना. मैंने दो बार बल्ला घुमाया पर दोनों बार गेंद, बैट से छुई तक नहीं. हर बार जब मुझसे गलती हुई तो भीड़ जोर से चिल्लाई जिससे मेरे टीम के साथियों की आवाज़ दब गई. मेरे साथी मेरा हौंसला बढ़ाने के लिए चिल्ला रहे थे, “छुटकू, कोशिश करो, तुम कामयाब होगे!” फिर मैंने एक कदम पीछे हटकर एक गहरी सांस ली.





एक कदम पीछे हटकर मैंने गौर से बॉलर को देखा. उसका काला चश्मा धूप में चमचमा रहा था. उसे देख कर मुझे मीनार पर खड़े सिपाही की याद आई. हम दोनों ने एक-दूसरे को घूरा. फिर मैंने अपने आसपास के शोर को नज़रंदाज़ किया और बैट करने के लिए तैयार हुआ. बॉलर ने गेंद फेंकी.









मैंने अपना पूरा जोर लगा कर बैट से गेंद को मारा. एक बार मुझे फिर से बल्ले की वही तेज़ आवाज़ सुनाई दी. जब मैंने सिर ऊपर उठाकर देखा तो छोटी गेंद, आसमान के रुई जैसे सफ़ेद बादलों को, चूम रही थी. ऐसा लगा जैसे गेंद बाउंड्री यानि बाड़ को क्रॉस करके बाहर जा गिरेगी.



1993 पालकों द्वारा चुनी सर्वश्रेष्ठ पुस्तक

“पुराने खेल में एक नया आयाम.” - बुकलिस्ट

“पुस्तक में उलझन, अचरज और आतंक सभी को बड़ी खूबसूरती से परिलक्षित किया गया है.” -

द न्यू यॉर्क टाइम्स

“बहुत सशक्त!” - स्कूल लाइब्रेरी जर्नल

“सिपाहियों, बाड़ और रेगिस्तान में घिरे जापानी मूल के अमरीकी नागरिक, नज़रबंद कैप में एक बेसबॉल का मैदान तैयार करते हैं. यहाँ एक छोटा लड़का बताता है कि कैसे उस खेल के मैदान ने, उसकी अन्याय और अपमान से भरी ज़िन्दगी को, एक नया अर्थ प्रदान किया. यह दिल को छूने वाली किताब है.” - अमेरिकन बुकसेलर

केन मोचिज़ुकी एक लेखक, पत्रकार और एक्टर हैं. दूसरे महायुद्ध के दौरान उनके माता-पिता को जापनी होने की वजह से आयडाहो के मिनीडोका कैप में भेजा गया था. वो अब सीएटल, वाशिंगटन, अमरीका में रहते हैं.

डोम ली का जन्म और बचपना सीओल, साउथ कोरिया में बीता. उन्होंने स्कूल ऑफ़ विसुअल आर्ट्स, न्यू यॉर्क सिटी से, मास्टर्स की डिग्री प्राप्त की. वो अब न्यू जर्सी, अमरीका में रहते हैं.

Printed in Hong Kong

LEE & LOW BOOKS Inc.
95 Madison Avenue
New York, NY 10016